महादेवी वर्मा के गीत

• पथ को न मलिन करता आना
पद चिन्ह न दे जाता जाना
सुधि मेरे आगम की जग में
सुख की सिहरन हो अन्त खिली
विस्तृत नभ का कोई कोना
मेरा न कभी अपना होना
परिचय इतना, इतिहास यही
उमड़ी कल थी मिट आज चली।

व्याख्या
नीर की बदली के रूप में कवयित्री कहती है कि संसार में उसके आने से न तो मार्ग गन्दा होता है और न कोई पद-चिन्ह शेष रह जाते हैं। कवयित्री कहती है कि उसकी यादें सुख भरी है। और उन विचारों से तन और मन सिहर जाता है। इतना विशाल आकाश है लेकिन उसका कोई भी कोना मेरा नहीं हो सकता अर्थात मेरे भाग्य में यही लिखा है कि नभ का कोई भी कोना मेरा नहीं हो सकता मेरा परिचय और इतिहास केवल इतना ही है कि कुछ दिन पहले मैं उमड़-घुमड़कर आसमान में छायी थी। कवियत्री का इस संसार में कोई नहीं है उसके संसार में होने यानहोने पर किसी को फर्क नहीं पड़ता, रह जाती है। जिन्हे लोग याद करते हैं और पुलकित होते है। कवयित्री के भाग्य मे केवल यही लिखा है कि कल वह संसार मेंआई थी और आज वह मिट जायेगी।

विशेष
• यहाँ कवयित्री का जीवन के प्रति निराशावादी दृष्टिकोण स्पष्ट हुआ है।
• उत्प्रेक्षा, उपमा व अनुप्रास अलंकार का प्रयोग हुआ है।

महादेवी वर्मा फिर विकल हैं प्राण मेरे
• फिर विकल हैं प्राण मेरे
तोड़ दो यह क्षितिज मैं भी देखलूं उस ओर क्या है।
जा रहे जिस पन्थ से युग कल्प उसका छोर क्या है
क्यों मुझे प्राचीर बन कर आज मेरे श्वास घेरे?

व्याख्या
महादेवी जी कहती हैं कि हे प्रियतम! आज मेरे प्राण अत्यधिक व्याकुल हो रहे हैं। मैं आज यह देखने के लिए व्यग्र हूँ। कि क्षितिज के उस पार क्या है? अतः प्रियतम क्षितिज को तोड़कर मुझे उस पार का दृश्य दिखा दीजिए। युग और कल्प जिस से जा रहे है उसका पर्यवसान कहाँ है? आज मेरी श्वासे ही मेरे लिए दीवार बन गई है, इन्हीं के कारण मैं अपनी इन जिज्ञासों का समाधान कर पाने मे अपने को असमर्थ पा रही हूं।

विशेष
• यहाँ रूपक अलंकार का प्रयोग किया गया है।

• नभ डूबा पाया न अपनी बाढ़ में भी क्षुद्र तारे
ढूंढने करुणा मृदुल घन चीर कर तूफान हारे
अन्त के तम में बुझे क्यों
आदि के अरमान मेरे

व्याख्या
महादेवी जी कहती है कि आकाश अपनी बाढ़ मे लघु नक्षत्रों को अस्तित्वहीन न कर सका। तारों की सत्ता, उनका अस्तित्व स्पष्ट, आकाश में परिलक्षित होता है। सिद्ध है कि वे चिन्तन है तूफान कोमल बादलों के वक्षस्थल को करुणा ढूंढने के लिए निरन्तर चीरते रहे हैं। अर्थात इच्छाओं और कामना का भी मृत्यु के अन्धकार मे कैसे विलीन हो सकती है। अर्थात इच्छाओं और कामनाओं का भी मृत्यु के अन्धकार में विलय नहीं होगा। भाव यह है कि भारतीय दर्शन के अनुसार व्यक्ति अपनी अतृप्त इच्छाओं की पूर्ति अपने दूसरे जन्म में करता है और जब तक उसकी सम्पूर्ण कामनाएँ पूर्ण नहीं हो जाती तब तक उसे जन्म-मृत्यु के बन्धन में बँधना पड़ता है।

महादेवी वर्मा - बीन भी हूँ मैं तुम्हारी रागिनी भी हूँ।

- बीन भी हूँ मैं तुम्हारी रागिनी भी हूँ।
  नींद थी मेरी अचल निस्पंद कण-कण में
  प्रथम जागृति थी जगत के प्रथम स्पन्दन में
  प्रलय में मेरा पता पदचिह्न जीवन में
  शाप हूँ जो बन गया वरदान बंधन में
  कूल भी हूँ कूलहीन प्रवाहिनी भी हूँ।

व्याख्या

यहाँ कवयित्री अपने प्रियतम अर्थात् परमात्मा से संवाद कर रही है। मैं तुम्हारी नश्वर संसार में बीन हूँ। और उससे बजने वाली रागिनी भी हूँ। मैं तुम्हारा संगीत भी हूँ। और उससे निकालने वाला स्वर भी हूँ। महादेवी वर्मा जी की यह स्वर व अज्ञात प्रियतम (परमात्मा) के प्रति प्रेम की अभिव्यक्ति है। वे कहती हैं कि स्थिर और निस्पन्द कण-कण में नींद थी और जगत का जो प्रथम स्पंदन था अर्थात कि जगत के मौन में उसकी नींद बसी थी और जगत में होने वाली प्रत्येक हलचल में उनका सजग भाव बसा हुआ था। कवियत्री कहती हैं कि मैं प्रलय में भी उपस्थित हूँ। और जीवन में भी पदचिन्ह मिलेंगे। जिस प्रकार परमात्मा का वास हर जगह है। उसी प्रकार कवियत्री ने भी स्वयं को हर स्थिति में उपस्थित माना है। कवियत्री आगे कहती है। कि मैं वो शाप हूँ जो बन्धन में बाँधकर वरदान बन गई हूँ। अर्थात् मेरा संसार में स्काकी जीवन एक शाप की तरह था लेकिन मैंने स्वंय को तुम्हारे बन्धन में बाँधकर उसी शाप को अपने लिए वरदान बना लिया है। यदि मैंने संसार के बहुत से मोह-माया के बन्धनों में स्वंय ही नियन्त्रण किया है। जिनके कारण तुम्हारे और मेरे प्रेम के बीच में अवरोधक बने थे।

विशेष

- यहाँ छायावाद की प्रमुख विशेषता रहस्यवाद को अभिव्यक्ति दी गई है।
- विरोधाभास अलंकार तथा पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार का प्रयोग किया गया है

Topic :

महादेवी वर्मा - मैं नीर भरी दुःख की बदली

- मैं नीर भरी दुःख की बदली
  स्पन्दन में चिर निस्पन्द बसा
  क्रन्दन में आहत विश्व हँसा
  नयनों में दीपक से जलते,
  पलकों में निर्झारिणी मचली।

व्याख्या

महादेवी वर्मा कहती है कि जिस प्रकार बदली में जल भरा रहता है, उसी तरह जीवन की परिस्थितियों में दुःख भरा हुआ है। कवयित्री कहती है कि उसके स्पन्दन में वह चिर निःस्पन्दन बसा है जो सदा से स्पन्दन रहित है स्थिर है। बादलों की गर्जना में पीड़ित और चोट खाए हुए संसार के लोगों की पीड़ा ही अभिव्यक्त होती है ऐसा लगता है कि कोई और से हँस रहा है परन्तु यह वास्तव में, किसी एक प्रेमी का रुदन या क्रन्दन है।
कवयित्री कहती है कि मुझे विरहिणी की आँखों में सदा दीपक से जलते रहते है। दीपक विरह में अग्नि या आशा के हो सकते है। पलकों से आँसू किसी नदी के समान बहने को तैयार रहते है। कवयित्री अपनी विरह वेदना को आँसुओं के रूप में प्रवाहित करना चाहती है। ठीक उसी तरह जैसे बदली अपने आप से जल के कणों को बहना चाहती है।

विशेष

- यहाँ महादेवी वर्मा ने अपने जीवन की तुलना बदली से करके अपनी विरह वेदना को अभिव्यक्ति दी है।
- विप्रलम्भ शृंगार रस का प्रयोग किया गया है।